GRT

वर्तमान दौर में मीडिया शिक्षा : एक अध्ययन

रजनीश कुमार झा

पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान मेवाड़ विश्वविद्यालय चित्तौड़गढ़ राजस्थान

सारांश - पत्रकारिता शिक्षा के समर्थन में तर्क दिए जाते हैं उनमें से एक तर्क गै कि यदि डाक्टरी के लिए कम से कम एमबीबीएस होना जरूरी है, वकालत के लिए डिग्री लेने के बाद ही आप वकील बन सकते हो तो पत्रकारिता ..जो आज के दौर में अहम हो गई है के लिए पत्रकारिता की डिग्री क्यों नहीं...पत्रकारिता जैसे महत्वपूर्ण पेशे को किसी के लिए खुला कैसे छोड़ा जा सकता है ?

प्रस्तावना-

आज के दौर में जब हम गाहे –बगाबे मीडिया एक्टीविजम जैसे श्ब्द सुनते हैं तब ये सवाल और अहम हो जाता है कि हर कोई पत्रकार कैसे बन सकता है? स्वतंत्रता दौर में हमने पत्रकारिता को मिशन माना लेकिन बदलते दौर में पत्रकारिता भी बदली और इसका स्वरूप भी...आज के दौर में तीन महीने से लेकर तीन साल तक के कोर्सेस बाजार में उपलब्ध हैं...बड़ी संख्या में लोग पत्रकारिता की पढाई कर के बाज़ार में तैयार है...खुछ लोग खुशकिस्मत हैं जिन्हें नौकरी मिल जाती है ..बहुत सारे ऐसे भी है जो अब भी मोटी-मोटी फीस देकर कोर्स कर चुके हैं और अभी भी धक्के खा रहे हैं...ऐसै में एक सवाल और उठता है कि क्या मेडिकल कॉउसिल ऑफ इंडिया और बार काऊंसिल की तरह एक निगरानी संस्था पत्रकारिता शिक्षा के लिए भी हो जो इसकी गुणवत्ता का ध्यान रखे और भेड़-बकरियों की तरह बाजार में पत्रकार पैदा नहीं होने दे ।

भारत में मीडिया शिक्षा की शुरूआत

भारत में मीडिया शिक्षा

1.भारत में मीडिया शिक्षा का पहला चरण

भारत में जेम्स हकी ने 1780 में लोकतंत्र के इस चौथे स्तंम्भ की स्थापना की...जब हमारे देश में अंगरेजों का राज था ...वारेन हेस्टिंग को हिक्की का ये अंदाज पंसद नहीं आया ..ये माना जाता है कि जिस प्रकार भारत में औपचारिक शिक्षा लाने का श्रेय मैकाले को जाता है ठीक उसी प्रकार मीडिया लाने का श्रेय हिक्की को जाता है

2.भारतीय में मीडिया शिक्षा का दूसरा काल

भारतीय मीडिया शिक्षा के पहले विद्यालय की स्थापना 1920 में अड्यार ,मद्रास में श्रीमती एनी बेसेंट के प्रयासों से हुई..इसका उद्देश्य राष्ट्रीयता एवं स्वतंत्रता की अलख जगाना था...1930 में अलीगढ़ मुस्लिम विव ने मीडिया शिक्षा की शुरूआत प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम के रूप में रहमत अली के नेतृत्व में की...मतभेदों के चलते 1940 में ये पाठ्यक्रम बंद कर दिया गया...

साल 1941 भारत में मीडिया शिक्षा के लिए काफी अहम माना जाता है...कहते हैं लंदन और कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़े लिखे पी पी सिंह, जवाहर लाल नेहरू के अनुरोध पर भारत आए और नई आशा की किरण लेकर संयुक्त भारत के पंजाब विवि ,लाहौर में पत्रकारिता विभाग स्थापित किया ..तब से लेकर अब तक यानी पिछ्ले 72-73 सालो में भारक के प्रमुख प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में से एक बन गया....पी पी सिंह मसूरी विवि ,अमेरिका के मीडिया स्नातक थे...1947 में देश का विभाजन हुआ और उसके बाद पीपी सिंह के साथ यह संस्थान भी दिल्ली में आ गया...1962 तक ये विद्यालय दिल्ली में भी बना रहा...और 1962 के बाद पंजाब विवि ,चंडीगढ़ में स्थापित किया गया जो आज भी शिक्षा और शोध के लिए प्रयासरत है....

इसी बीच 1952 में नागपुर विवि ने पारंपरिक तौर पर मीडिया शिक्षा कार्यक्रम की शुरूआत की,बाद में ये विभाग भी बंद हो गया...स्वतंत्रता के समय से मद्रास विवि ने मीडिया शिक्षा का सफलतापूर्वक संचालन किया जो आज भी अपना योगदान दे रहा है...भारतीय जनसंचार संस्थान में 1965 में मीडिया शिक्षा एवं जनसंचार प्रशिक्षण की शुरूआत की गई..पहले पहल ये संस्थान सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के कर्मचारियों को प्रशिक्षण दे रहा था ...बाद में ये स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और शोध के क्षेत्र में भी काम करने लगा....

3.भारत में मीडिया शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

आज भारत में मीडिया शिक्षा अपनी तरूणा अवस्था में है...मीडिया शिक्षा की जरूरतें और लक्ष्य वो नहीं है जो आज से केवल 12-13 वर्ष पूर्व थे...उस समय केवल मुद्रण पत्रकारिता की ही पढ़ाई होती थी ..पर वक्त बदलने के साथ पत्रकारिता की पढाई का स्वरूप भी बदल गया या कहें बदलने की जरूरत आ गई...कारण कि मुद्रण पत्रकारिता के साथ साथ अब टेलीविजन पत्रकारिता ,इंटरनेट पत्रकारिता,रेडियो पत्रकारिता,ई पेपर आदि भी इस शिक्षण माध्यम में शामिल हो गए...आज मौजूदा दौर में ये हालत है कि मीडिया संस्थानों की संख्या भी हज़ार के आसपास पहुंच गई होगी...लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं की वहां की गुणवत्ता कैसी है..कई जगह तो केवल सैद्धांतिक शिक्षण देकर उसकी खानापूर्ति की जाती है...लगभग 3000 से अधिक छात्र स्नातकोत्तर डिग्री लेकर निकल रहे हैं...अब कई विश्वविद्यालय में एम फिल और पीएचडी की उपाधि प्रदान की जाने लगी है...लेकिन यहां भी सवाल इसकी गुणवत्ता को लेकर ही उठ रहे हैं..

सामान्य तौर पर कहें तो मौजूदा दौर में मीडिया शिक्षा का स्तर व्यवसायिक मानकों पर खरा नहीं उतरता है...शायद यही वजह है कि आज कई मीडिया घरानों ने अपने अपने संस्थान खोल रखे हैं...जहां वो अपने मनमुताबिक प्रशिक्षण दे रहे हैं...

अध्ययन का उद्देश्य

1. **उत्तर भारत में मीडिया शिक्षा की मौजूदा स्थिति**
2. **मौजूदा दौर में चल रहे मीडिया संस्थानों की हालत**
3. **यहां पढ़ रहे छात्रों को किस तरह से मिल रहा है पत्रकारिता प्रशिक्षण**

उपकल्पना

1. **क्या वाकई क्लास रूम में पत्रकार पैदा किए जा सकते हैं**
2. **पत्रकारिता को अपना पेशा बना रहे लोगों की क्या सचमुच प्रशिक्षण की आवश्यकता है**
3. **अगर आवश्यकता है तो क्या इंडस्ट्री के मुताबिक उन्हें तैयार किया जाता है**

अध्ययन का क्षेत्र व सीमा

हालांकि भारत में मीडिया शिक्षा का विस्तार पूरे देश में हैं लेकिन शोधार्थी ने उद्देश्यपूर्ण निर्दशन पद्धति का उपयोग करते हुए उत्तर भारत और मध्य भारत को ही अपना क्षेत्र बनाया है

शोध प्रविधि

1. **अंतरवस्तु विश्लेषण**
2. **साक्षात्कार प्रविधि**
3. **अवलोकन प्रविधि**
4. **द्वतीयक सामग्री**

मीडिया शिक्षा –एक अध्ययन

1. **उत्तर भारत में मीडिया शिक्षा की मौजूदा स्थिति**

पूरे भारत में मीडिया शिक्षा मोटे तौर पर सात स्तरों पर पढाई जा रही है...पहला सरकारी विश्वविद्यालयों या कॉलेजों में,(जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय और उनके अधीन कॉलेजों में) दूसरे विश्वविद्यालयों से संबंद्ध सस्थानों में (VIPS JAGGANATH

INST) , तीसरा भारत सरकार के स्वायत्त प्राप्त संस्थानों में(एमिटी) , चौथा दूसरे विश्वविद्यालयों से संबंद्ध संस्थानों में(EDITWORKS) , पांचवा पत्रकारिता पर केंद्रित विश्वविद्यालयों में(माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, हरिदेव जोशी पत्रकारिता विवि, और कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विवि) , छठा सूचना प्रसारण मंत्रालय के तहत आने वाले संस्थानों(IIMC, FTTI) में और सातंवा मीडिया संस्थानों(TVTMI, PIONEER INSTITUTE, TIMES SCHOOL OF JOURNALISM) के द्वारा खोले गए संस्थानों में ।

2.मौजूदा दौर में चल रहे मीडिया संस्थानों की हालत

उदारीकरण के दौर में या कहें भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के आने के बाद इस प्रोफेशन में लोगों की रूचि अप्रत्याशित रूप से बढ़ी...लोग टीवी का कोर्स करने लगे ..इस उम्मीद से कि वे भी बतौर एंकर और रिपोर्टर टीवी पर दिखने लगेंगे...यही वजह रही कि आज हर बड़े शहर में आपको टेलीविजन पत्रकारिता सीखाने वाले संस्थान मिल जाएंगे..ये बात और है कि इस संस्थानों में पढ़ाने वालों ने कभी किसी चैनल में काम न किया हो...सवाल फिर वही उठता है कि आखिर कई संस्थान न केवल प्राइवेट बल्कि सरकारी संस्थानों में पढ़ाता कौन है ..सरकारी संस्थानों में यूजीसी नियमों के तहत नेट उतीर्ण शख्स ही पढ़ा सकता है लेकिन यहां भी एक सवाल उठता है कि कल कोई भी व्यक्ति पत्रकारिता में स्नातकोत्तर और नेट कर ले और प्राध्यापक बन तो जाएगा लेकिन क्या वह छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दे पाएगा? आजकल कई संस्थानों में अब भी गेस्ट फैकल्टी बुलाने का प्रचलन है...किसी भी प्रिंट और टीवी में काम कर रहे पत्रकारों को एक घंटे के लिए 500-1000 रूपए दिए जाते हैं और वह किस्सा कहानी सुनाकर पाठ्यक्रम और सिलेबस की इति श्री कर लेता है...

मीडिया शिक्षा की मौजूदा हालत पर ना तो प्रिंट मीडिया और ना ही इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, रेडियो , और अब न्यू मीडिया के संस्थानों ने गंभीरता से सोचा है...देश भर में जो संस्थान हैं वो वर्षों पुराना पाठ्यक्रम , 80-90 दशक के पत्रकारों को गेस्ट अतिथि और व्यवहारिक प्रशिक्षण के नाम पर मीडिया हाउसेज का भ्रमण करवाकर अपना काम संपन्न समझ लेते हैं...मीडिया का बाज़ार जिस तरह से पिछले डेढ़ दशक में हमारे यहां बढ़ा है...उसके लिए जरूरी है कि योग्य शिक्षकों की खोज, उनकी ट्रेनिंग और सही पैकेज पर फोकस करने की जरूरत है..

उदारीकरण के बाद आए मीडिया विस्फोट के इस रूप में जिस तरह टेक्नोलॉजी पर पत्रकारिता आधारित हो गयी है ..इससे एक बात तो साफ है कि अब मीडीया संस्थानों को कॉपी –पेन लेकर लिखनेवाला पत्रकार नहीं चाहिए...उन्हें तकनीकी आधारित पत्रकार चाहिए..प्रिंट में वे हो तो उन्हें पेजमेकिंग,टाइपिंग,इटरनेट सर्फिंग आदि आना चाहिए वहीं अगर आप टेलीविजन पत्रकारिता में हो तो आपको विजुअल ,कॉपी, रनडाउन, क्रोमा, स्टिंग, आदि की समझ होनी चाहिए...

आज के दौर में अगर आप कुछ बड़े संस्थानों को छोड़ दें खासकर IIMC और MCRC तो ये मैं गारंटी के साथ कह सकता हूं कि कई छात्रों को टेलीविजन पत्रकारिता के व्यवहारिक ज्ञान डिग्री के बाद भी नहीं मिल पाता है जब तक वे किसी संस्थान में काम ना करें

क्या वाकई क्लास रूम में पत्रकार पैदा किए जा सकते हैं

सवाल ये है कि पत्रकारिता शिक्षण की क्या वाकई जरूरत है...अब से कुछ दिन पहले मौजूदा सूचना प्रसारण मंत्री ने कहा था कि ' पत्रकारों के लिए कॉमन टेस्ट होना चाहिए. उन्होंने कहा कि मीडिया उद्योग को बार काउंसिल द्वारा आयोजित परीक्षा की तर्ज पर पत्रकारों के लिए साझा परीक्षा आयोजित करने पर विचार करना चाहिए, जिसके बाद उन्हें इस पेशे के लिए लाइसेंस दिया जा सके. तिवारी ने एक कार्यक्रम में कहा कि मुझे लगता है कि अच्छा शुरुआती बिन्दु यह होगा कि पाठ्यक्रम तय करके संस्थानों को आदर्श बनाने के बजाय, संभवत: मीडिया उद्योग कम से कम साझा परीक्षा कराने के बारे में सोच सकता है. उन्होंने कहा कि जैसा कि बार काउंसिल, मेडिकल या अन्य पेशेवर संस्थानों की परीक्षाएं होती हैं, जिसमें परीक्षा के बाद लाइसेंस जारी किया जाता है, जो आपको पेशे में काम करने के सक्षम बनाता है'

सूचना प्रसारण मंत्री को ये बातें कहने की जरूरत क्यों पड़ी..ये गौर करने वाली बात है...क्या मीडिया में बिना पढ़े लिखे लोग आ रहे हैं...क्या मीडिया अयोग्य लोगों का जमावड़ा बन गया है...पिछले कुछ वर्षो में पत्रकारिता ने अपना मान भी खोया है...चाहे लाइव इंडिया चैनल की तरफ से किया ग.या स्टिंग ऑपरेशन उमा खुराना हो या फिर कुछ और ..क्या पत्रकारों को पत्रकारिता में डिग्री लेकर लाइसेंस लेनी चाहिए.. ताकि अगर आप गलती करें तो लाइसेंस रद्द कर दिया जाए...खैर तिवारी के इस बयान पर काफी बवाल भी हु आ...इस बीच डाक्टर और इंजीनियर की तरह औपचारिक डिग्री अनिवार्य करने के लिये प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की ओर से एक समिति का गठन कर दिया गया है. समिति तय करेगी कि पत्रकारों की शैक्षिक योग्यता क्या हो. शिक्षित किया जाये क्योंकि प्रशिक्षण के अभाव में ही पत्रकारिता में नकारात्मकता का प्रभाव बढ़ा है?

भारत में मीडिया शिक्षा की जरूरत क्यों?

भारत में मीडिया शिक्षा के पुरोधाओं में से एक प्रो. के. ई. ईपन का कहना है कि ' पत्रकारिता पढ़ाने वालों के पास पत्रकारिता की औपचारिक शिक्षा के साथ साथ उद्योग यानि मीडिया के काम करने का प्रत्यक्ष अनुभव होना भी आवश्यक है। उसके बगैर वे प्रभावी ढंग से अध्यापन नहीं कर पाएंगे।' वे लिखते हैं कि व्यावहारिक प्रशिक्षण की तरफ ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। बिना इसके काम नहीं चलेगा। इसके साथ ही देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर मीडिया शिक्षा का माडल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस काम को करते हुए केवल अमरीका ही नहीं दूसरे देशों के मौजूदा प्रोग्राम्स का अध्ययन भी हो, यह आवश्यक है। इसी क्रम में विदेशी पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी आवश्यक है ताकि उनकी अच्छी चीजों को हम अपना सकें और उनके अनुभव का लाभ भारत को भी मिल पाए। इसी तरह समागम शोध पत्रिका के संपादक मनोज कुमार लिखते हैं कि काटजू साहब अनुभवी हैं और उन्हें लगता होगा कि पत्रकारों की शैक्षिक योग्यता तय करने के बाद पत्रकारिता के स्तर में जो गिरावट आ रही है, उसे रोका जा सकेगा और इसी सोच के साथ उन्होंने डाक्टर और इंजीनियर से इसकी तुलना भी की होगी. याद रखा जाना चाहिये कि एक पत्रकार का कार्य एवं दायित्व डाक्टर, इंजीनियर अथवा वकील के कार्य एवं दायित्व से एकदम अलग होता है. पत्रकारिता के लिये शैक्षिक योग्यता जरूरी नहीं है, यह हम

नहीं कहते लेकिन केवल तयशुदा शैक्षिक डिग्री के बंधन से ही पत्रकार योग्य हो जाएंगे, इस पर सहमत नहीं हुआ जा सकता है. पिछले बीस वर्षों में देशभर में मीडिया स्कूलों की संख्या कई गुना बढ़ गयी है. इन मीडिया स्कूलों की शिक्षा और यहां से शिक्षित होकर निकलने वाले विद्यार्थियों से जब बात की जाती है तो सिवाय निराशा कुछ भी हाथ नहीं लगता है. अधिकतम 25 प्रतिशत विद्यार्थी ही योग्यता को प्राप्त करते हैं और शेष के हाथों में डिग्री होती है अच्छे नम्बरों की. शायद यही कारण है कि पत्रकारिता की उच्च शिक्षा के बावजूद उनके पास नौकरियां नहीं होती है 'मनोज कुमार का ये भी मानना है कि 'पत्रकारों की योग्यता का सवाल इसलिये भी बेकार है क्योंकि पत्रकारिता हमेशा से जमीनी अनुभव से होता है. किसी भी किस्म का सर्जक माटी से ही पैदा होता है. मुफलिसी में जीने वाला व्यक्ति ही समाज के दर्द को समझ सकता है और बेहतर ढंग से अभिव्यक्त करता है. एक रिपोर्टर अपने अनुभव से किसी भी मुद्दे की तह तक जाता है और साफ कर देता है कि वास्तविक स्थिति क्या है. पत्रकारों की जिंदगी और सेना की जिंदगी में एक बारीक सी रेखा होती है. दोनों ही समाज के लिये लड़ते और जीते हैं. सैनिक सीमा की सरहद पर देश के लिये तैनात रहता है तो पत्रकार सरहद की सीमा के भीतर समाज को बचाने और जगाने में लगा रहता है..'

मनीष तिवारी के मीडिया छात्रों के लिए एक परीक्षा और लाइसेंस देने को लेकर भी बहस छिड़ गयी .. वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप कुमार अपने फेसबुक वॉल पर लिखते हैं कि **कुछ इसी तरह की राय वरिष्ठ पत्रकार और अब राज्यसभा सदस्य हरिवंश की है..वे अपने फेसबुक वॉल पर लिखते हैं कि'** पत्रकार होने की न्यूनतम योग्यता तय करने के लिए. अच्छा प्रयास है. पर क्या पत्रकारों की न्यूनतम योग्यता तय हो जाये, तो पत्रकार योग्य हो जायेंगे?दरअसल, पत्रकारिता एक पैशन (आवेग, उमंग, उत्साह) है. कोई भी पेशा एक धुन है. सनक है. और शौक भी. पर पेशे के प्रति यह पैशन पैदा होता है, शिक्षण संस्थाओं से. समाज और राजनीति से. पत्रकार भी इसी समाज-माहौल की उपज हैं. वे किसी अलग ग्रह से नहीं उतरते. भारत के शिक्षण संस्थानों की क्या स्थिति है? विश्वविद्यालय और कॉलेजों से किस स्तर के छात्र निकल रहे हैं? उनकी योग्यता क्या है? पीएचडी किये लोग आवेदन नहीं लिख पाते. हरिवंश का ये भी मानना है कि ' अनेक ऐसे पत्रकार हुए, हिंदी या अंगरेजी में, जिनकी औपचारिक शिक्षा नहीं थी, पर उनमें आवेग था, प्रतिबद्धता थी, वैचारिक आग्रह था. समाज के प्रति कुछ करने की धुन थी. यह जज्बा पैदा होता था, राजनीति से. उस राजनीति से, जिसमें विचार जिंदा थे, जो राजनीति धंधा नहीं थी और न सत्ता पाने का महज मंच. डाक्टर लोहिया, जब लोकसभा का उपचुनाव जीत कर गये, तो उन्होंने लोकसभा में हिंदी में बोलना शुरू किया. तब तक संसद में अंगरेजी ही सबसे प्रभावी भाषा थी. पर डॉ लोहिया के भाषणों में वैचारिक तत्व इतने प्रखर और तेजस्वी थे कि अंगरेजी जाननेवाले विद्वानों-धुरंधर पत्रकारों ने हिंदी पढ़ी, सीखी और जानी. समाज, देश या राजनीति में सबसे प्रमुख है, चरित्र, विचार और पैशन. यह पैदा होता है, सिर्फ वैचारिक राजनीति से. चरित्रहीन राजनीति या गद्दी की राजनीति से नहीं. आजादी की लड़ाई में ऐसे ही वैचारिक और चरित्रवान राजनेता हुए तो पत्रकारिता भी बदल गयी. एक से एक विचारवान पत्रकार उभरे. कुछ लोगों को गलत धारणा है कि आजादी की लड़ाई में पत्रकारिता ने राजनीति बदली'

वरिष्ठ पत्रकार हरिकृष्ण निगम लिखते हैं कि ' डा. काटजू पत्रकारिता में डिग्री या डिप्लोमा की अनिवार्य शर्त उन सब लोगों के लिए लगाना चाहते हैं जो समाचार पत्रों, पत्रिकाओं या श्रव्य-दृश्य मीडिया में नौकरी किसी भी स्तर पर

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3 | Issue-9 | March-2014 Available online at www.aygrt.isrj.net

चाहते हैं। श्री काटजू को ज्ञात होना चाहिए कि चाहे दंतकथा बने पिछली पीढ़ी के पत्रकार के.रामाराव हो, जिनकी द मेन एज़ माई स्वौर्ड & rsquo; **या दुर्गादास चलपति राव, डी.आर मनकेकर, अथवा कुलदीप नैयर, शाम लाल, और गिरिलाल जैन उनकी विश्वविख्यात कृतियों में देश की पत्रकारिता का इतिहास समाहित है। उन सबने अनुभव, अभिव्यक्ति और श्रम के साथ भाषा पर पकड़ को ही सही पत्रकारिता का एकमात्र मानदंड माना है, किसी डिग्री या डिप्लोमा को नही।'**

मीडिया शिक्षा को लेकर कुछ सेमिनारों और प्रोफसरों की क्या राय है वे भी जान लेते हैं

- **छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री शेखर दत्त का मानना है कि ' आज जरूरत है कि सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़कर मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में अद्यतन मापदंड स्थापित किया जाये जिससे यह श्रेष्ठता के शिखर को छू सकें। मीडिया शिक्षा में ज्ञान, निरीक्षण और विश्लेषण तथा अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाना होगा। इन तीन गुणों से युक्त पत्रकार या मीडिया कर्मी जहां कहीं भी जायेंगे अपनी छाप छोडेंगे। मीडिया शिक्षा के लिए आज योग्य और दक्ष फैकल्टी का उपलब्ध होना एक चुनौती है। जैसे-जैसे मीडिया पाठयक्रमों की लोकप्रियता बढ़ रही है, अध्यापन के लिए अनुभवी शिक्षकों की मांग भी बढ़ रही है। लेकिन समस्या अकादमिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों में दक्ष व्यक्तियों की है। मीडिया शिक्षा को वर्तमान के साथ तालमेल बैठाते हुए उचित पाठयक्रम के अनुसार संचालित करने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर नियमन करने की भी आवश्यकता है' ।(मई 2011 में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विवि के एक सेमिनार में)**
- **कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सच्चिदानंद जोशी ने एक संगोष्ठी में कहा कि ' आज बड़ी संख्या में युवा वर्ग पत्रकारिता को कैरियर बनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता एवं जनसंचार की शिक्षा प्रदान की जाती है। इन पाठयक्रमों में एकरूपता रहे, मीडिया शिक्षा के मापदंड को उंचा उठाया जाए तथा विद्यार्थियों में पुस्तकीय ज्ञान के अलावा व्यवहारिक ज्ञान बढ़ाया जाए' ।(मई 2011 में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विवि के एक सेमिनार में**)
- **भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष न्यायमूर्ति जीएन. रे ने अपने उद्बोधन में कहा कि प्रजातंत्र में प्रेस को चौथे स्तंभ के रूप में देखा जाता है और यह प्रजातंत्र को मजबूत करने में लगा हुआ है। आज पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक बदलाव आये हैं। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और गोपालकृष्ण गोखले की पत्रकारिता के क्षेत्र में किये गये कार्यों का उन्होंने उल्लेख किया तथा मीडिया के इतिहास उसके विभिन्न कालों के परिवर्तन रूपों और वर्तमान मीडिया के वैश्विक स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा कि मीडिया की भूमिका अब काफी बढ़ गयी है। वर्तमान जरूरतों को देखते हुए उन्होंने पत्रकारिता तथा जनसंचार के पाठयक्रमों को अद्यतन करने पर उन्होंने जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि पत्रकारिता से जुड़े मीडियाकर्मियों को देश के इतिहास, भूगोल और सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का समुचित ज्ञान होना जरूरी है।**(**मई** 2011 **में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विवि के एक सेमिनार में).**

- **माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता वि में प्राध्यापक संजय द्विवेदी लिखते हैं कि' पत्रकारिता को एक ऐसा कर्म मान लिया गया, जिसे कोई भी कर सकता है। ज़ाहिर है उसे पढ़ाने के लिए भी हर कोई तैयार था। ऐसे मीडिया गुरू, मीडिया शिक्षा के मैदान में कूद पड़े, जो स्वयं मीडिया के क्षेत्र में पिटे हुए मोहरे थे'**

मीडिया शिक्षा की जरूरत-

बढ़ते औद्योगिकीकरण और उसके कारण आर्थिक, सामाजिक, व्यावसायिक, शैक्षणिक, सभी क्षेत्रों में प्रगति एवं परिवर्तन की राह भी तेजी से जोर पकड़ रही है। पुराने और पारंपरिक तौर तरीकों की बजाए आज नई तकनीकें अपनाने की प्रतिस्पध्दा है। सभी क्षेत्रों के कर्ता-धर्ता अब सोचने लगे हैं कि नए आधुनिक तौर तरीके नहीं अपनाए तो पिछड़ जाएंगे । यही वजह है कि पत्रकारिता प्रशिक्षण की मांगे भी बढञी है और लोगों का इस ओर रूझान भी बढ़ा है...हाल के दिनों में महानगरों से लेकर नगर तक में कई प्रशिक्षण संस्थान खुल गए हैं जो पत्रकारिता के विभिन्न भागों- प्रिंट, टीवी, रेडियो, इंटरनेट, फोटोग्राफी , और अब तो सोशल मीडिया तक की ट्रेनिंग दी जा रही है...आलम ये है कि कई मीडिया संस्थानों ने खुद ही अपने संस्थान खोल लिए हैं...हालांकि ये अलग विषय है और हम इस पर किसी अगले शोध पत्र में चर्चा करेंगे...फिलहाल इस शोध पत्र के जरिए हम ये जानने की कोशिश करेंगे कि क्या मीडिया शिक्षा की वाकई जरूरत है..क्या वाकई पत्रकार क्लास रूम में पैदा होते हैं या हो सकते हैं...क्या हम किसी को भी पत्रकारिता की एबीसीडी पढ़ाकर उसे महात्मा गांधी , लोकमान्य तिलक ,माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, और बाबूराव पराड़कर के आसपास भी रख सकते हैं ...और तो और मौजूदा दौर में क्या हम इन् पत्रकारों को प्रभाष जोशी,अच्युतानंद मिश्र, प्रणब रॉय, विनोद दुआ, की कतार में खड़ा कर सकते हैं

प्रारंभ के दिनों में देश में अंग्रेजी पत्रकारिता के दिग्गजों का मानना था कि पत्रकार पैदा होते हैं और पत्रकारिता पढ़ा कर सिखाई नहीं जा सकती।इसके चलते पत्रकारिता शिक्षा व प्रशिक्षण की उपयोगिता उद्योग के लोगों के गले उतारने में खासा समय लगा। हमारे जैसे लोगों को इसके लिए खूब जूझना पड़ा। मगर कालांतर में पत्रकारिता विभागों से पढ़कर निकले स्नातकों ने अंग्रेजी, हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं में बिना प्रशिक्षण के आए लोगों के मुकाबले कहीं बेहतर काम किया तो यह धारण टूटी |

हमने पाया कि मीडिया शिक्षा के मुद्दे पर दो राय है..एक पक्ष जहां मीडिया शिक्षा को आज के समय की जरूरत बताता है वहीं दूसरा पक्ष ये मानता है कि पत्रकार खुद समाजिक परिवेश और आस पास के माहौल को देखकर बनता है...पत्रकार क्लास रूम में पैदा नहीं किए जा सकते हैं...ये भी मजेदार बात है कि अगर आज चर्चित और वरिष्ठ पत्रकारों में देखे तो दोनों ही वर्गों में कुछ ऐसे पत्रकार हुए हैं जिन्होनें पत्रकारिता में शिखर को छुआ है...एसपीसिंह, राजेंद्र माथुर , उदयन शर्मा,कमर वहीद नकवी जैसे पत्रकार जहां टाइम्स स्कूल ऑफ जर्नलिज्म की देन हैं..वहीं प्रभाष जोशी, ओम थानवी, राहुल देव ,प्रणब रॉय जैसे पत्रकार बिना किसी पत्रकारिता संस्थान के मैदान में आए और छा गए...कहने का मतलब ये है कि पत्रकारिता का प्रशिक्षण आपको वरिष्ठ पत्रकार विश्वनाथ के शब्दों में कहे तो ऐसा है कि...' कुछ बीमारियां तो दादा-दादी के टोटके भी ठीक कर देते हैं , कुछ बीमारियां एमबीबीएस के बस की भी नहीं होती है और हमें विशेषज्ञों के पास जाना पड़ता है..डॉक्टर योग्यता और विशेषज्ञता खुद अर्जित करते हैं , कुछ ऐसी ही डॉक्टरों जैसा पेशा पत्रकारिता भी है...जैसे डॉक्टर से हम योग्यता और बीमार को ठीक करने की

ईमानदार कोशिश की अपेक्षा करते है..कुछ वैसे ही पत्रकार से भी अपवेक्षा करते हैं कि वो भी योग्यता, संवेदनशीलता, बिना पक्षपात , और ईमानदारी से काम करे...ये गुण जन्मजात भी हो सकते हें लेकिन जैसे हीरे को तराश कर चमकाया जाता है वैसी ही जरूरत पत्रकारों की भी होती है'|

वरिष्ठ पत्रकार विश्वनाथ की बातों को मैं भी सही मानता हूं ...पत्रकारिता के प्रशिक्षण से पूर्व लिखते हम भी थे ..और आज भी लिखते हैं लेकिन एक स्टाइल जो हमें पढ़ाया गया वो हमारे बराबर काम आया...हमारे विभागाध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार और अब प्रोफेसर रामशरण जोशी हुआ करते थे..उन्होनें बताया था कि केवल आप किताब पढ़कर पत्रकार नहीं बन सकते ... कल्पना, विषय और वैचारिक मजबूती के साथ व्यवहारिक ज्ञान आपको एक बेहतर पत्रकार बना सकता है...वेब दुनिया की फीचर प्रभारी रहीं स्मृति जोशी लिखती हैं कि ‘ पत्रकारिता विश्वविद्यालय में प्रवेश के पूर्व भी मेरी अपनी एक भाषा थी ,सभी की होती है किंतु यहां आने के बाद मैनें जाना कि अपने शब्द संसार को निरंतर समृद्ध करना कितना आवश्यक है..कम्यूनिकेशन के लिए आवश्यक अनुभवों ने यहीं विस्तार पाया ...अधिक स्पष्ट शब्दों में कहूं तो अवसर, समय, श्रोता और श्रोता की समझ के स्तचर को ध्यान में रखते हुए किन शब्दों का चयन करना है हमनें यहीं से सीखा, भाषा मेरी अपनी थीकल भी और आज भी लेकिन उसे निरंतर तराशने -संवारने का काम मुझे विश्वविद्यालय के दौरान मिले प्रशिक्षण ने ही सिखाया ’

यानी स्मृति जोशी की बात को देखें और वरिष्ठ पत्रकार विश्वनाथ की ..तो मुझे लगता है कि आज के माहौल में पत्रकारिता का जो स्तर बदला है या कहे उसमें तकनीक का प्रभाव जो बढ़ा है ऐसी परिस्थिति में मीडिया शिक्षा आज की जरूरत है

संदर्भ:

1. नंदा वर्तिका(2009)-‘ बिन शिक्षक सब सून’ मीडिया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रकाशित : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, भोपाल
2. जोशी स्मृति (2009): ‘ अहम होती है पत्रकारिता शिक्षण की भूमिका’ मीडिया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रकाशित : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, भोपाल
3. अग्रवाल दीपशिखा(2009): ‘ प्रशिक्षण के नाम पर क्या मिल रहा है? मीडिया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रकाशित : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, भोपाल
4. चतुर्वेदी उमेश (2009) : ‘तकनीक और वैचारिकता का अंतर्द्वंद’ मीडिया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रकाशित : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, भोपाल
5. सिंह डॉ देवव्रत (2009) : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया शिक्षण की बदलती विधाएं: मीडिया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रकाशित : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, भोपाल
6. दयाल डॉ मनोज एवं कुमार पंकज (2009) : मीडिया शिक्षा में शोध की जरूरत: मीडिया मीमांसा (अक्टूबर-दिसंबर 2009) में प्रकाशित : माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विवि, भोपाल
7. हरिवंश , संपादक , प्रभात खबर(2009) योग्य पत्रकार: फेसबुक वॉल

8. **तिवारी मनीष, (26 अगस्त 2013),पत्रकारों के लिए परीक्षा हो:खबर भारती**
9. **कुमार कुलदीप(26 अगस्त 2013), जनसत्ता: पत्रकारिता प्रशिक्षण**
10 . कुमार मनोज, संपादक, समागम(4 अगस्त 2013) समाचारफॉरमीडिया डॉट कॉम: पत्रकारों की शिक्षा नहीं, शिक्षित होना ज्यादा जरूरी'
11. **दैनिक भास्कर**, **रायपुर**(5 **मई** 2011) , **मीडिया शिक्षा**: **भविष्य एवं दिशा**, **राज्यपाल शेखर दत्त का उद्बोधन**
12. **थानवी ओम**, **संपादक**, **जनसत्ता**(2013) (**जानकी पुल ब्लॉग से** : **पत्रकारिता की शिक्षा गैर पत्रकार कैसे देते हैं** ?
13. Bhadas4media.com
14. Samachar4media.com
15.**अमानी शरण**, (**दिसंबर** 2012) **मीडिया शिक्षा के पुरोधाओं में से एक प्रो. के. ई. ईपन का साक्षात्कार,**